मिसपाल : कामकाजी महिलाओं का अकेलापन

डॉ. गौरी त्रिपाठी

'मिसपाल' न सिर्फ मोहन राकेश की एक 'सिग्नेचर' कहानी है बल्कि नई कहानी की भी एक सशक्त 'सिग्नेचर' है। ऊब,अकेलेपन और एकरसता की जैसी सघन और निर्मम अभिव्यक्ति इस कहानी में संभव हो सकी है वैसा न तो पूर्ववर्ती युग की किसी कहानी में दिखाई देता है, और न उसके बाद आधी सदी की यात्रा पूरी करती किसी हिंदी कहानी में।

प्रेमचंद की 'बूढ़ी काकी',प्रसाद जी की 'ममता' या ऐसी ही कई कहानियों की स्त्रियां मुझे एक साथ याद आ रही है, जिनमें धर्मवीर भारती की 'गुलकी बन्नो'अज्ञेय की 'रोज' और खुद मेरे बहुत प्रिय कहानीकार निर्मल वर्मा की 'परिंदे' आदि कहानियों की स्त्री पात्र हैं।

हाई स्कूल की परीक्षा पास करने के बाद गर्मी की छुट्टियों में मैंने पाठ्यक्रमों से बाहर जाकर पहली बार निर्मल वर्मा की कहानी 'परिंदे' पढ़ी थी। और महीनों उसकी स्मृति छाया घेरे रही थी। उसके बाद तो कहानियां और उपन्यास पढ़ने का एक ऐसा सिलसिला बना कि हिंदी साहित्य की छात्रा और फिर अध्यापिका होना मेरी नियति ही बन गयी।

नई कहानी के लगभग सभी कथाकारों ने मध्यवर्गीय अकेलेपन को लेकर एक से एक बेहतरीन कहानियां लखीं, महिला लेखिकाओं में उषा प्रियंवदा इसमें सिद्धहस्त हैं।आप उनका कोई भी उपन्यास पढ़ सकते हैं-'पचपन खंभे लाल दीवारें','रुकोगी नही राधिका' या लंबी कहानी 'आधा शहर' इनके चरित्रों की नियति ही लगती है एकांत और अकेलापन। 'परिंदे' की 'लतिका' के आसपास भी उदास सन्नाटे से घिरा एक रहस्यमय अकेलापन है। निर्मल वर्मा की काव्यमयी भाषा और विम्बात्मकता वातावरण में फैली उदासीसन को मद्धिम संगीत की लय से और ज्यादा सघन करती है।ऊपर उड़ते चले जा रहे बेठिकाना परिंदे।यहां की उदासी पाठक को बहुत तीव्रता से अपने रोमानी आगोश में लपेटती है।

जब हाई स्कूल के बाद मैंने पहली बार कोर्स से बाहर की यह कहानी पढ़ी तो उसका असर इस कदर गहरा गया था कि मैं बार-बार खुद के भीतर लतिका को जीने से लगी थी। आज तक वह कहानी मेरी बौद्धिक परिवरिश और सौंदर्य बोध का अनजाने बनी आधार प्रतीत होती है।आसपास से निरासक्त और तटस्थ लतिका सिर्फ बालकनी में बैठकर विदा होती सांझ से झुटपुटे में अपने को खोजती रहती।

बात मोहन राकेश की कहानी 'मिस पाल' और इसी बहाने कामकाजी महिलाओं के अकेलेपन की है। मिस पाल दिल्ली जैसे महानगर के सूचना विभाग में 500 रुपये महीने की अच्छी खासी नौकरी कर रही है। जब यह कहानी लिखी गई थी, तब 500 रुपये महीने की नौकरी आर्थिक संरचना की दृष्टि से सम्पन्न मध्यवर्ग का आभास कराती है। वह यौवन की दहलीज पर होने के बावजूद आकर्षण विहीन, कुरूप और थुलथुल है। अगर वह सुंदर तथा आकर्षक होती तो भी समस्याएं होतीं पर दूसरे

किस्म की। जैसी उषा प्रियंवदा की कहानी 'आधा शहर' में है। आधा शहर कहानी में विश्वविद्यालय का परिवेश है।कहानी की मुख्य चरित्र 'इला' है। मिस पाल से उलट इला खूबसूरत और आकर्षक है।सहकर्मियों के बीच अपने चरित्र को लेकर अफवाहों से इस कदर घिरी है कि उसमे आधा शहर उसके साथ हमविस्तर हो चुका है।वे कोई सड़कछाप शोहदे नहीं, सब विश्वविद्यालय के प्रोफेसर हैं। किताबों से ज्यादा अध्यापिकाओं और छात्राओं की रुचि।

कुरूप मिसपाल सहकर्मियों के बीच फब्तियों से आहत है तो सुंदर सुरुचि सम्पन्न इला चारित्रिक अफवाहों से। एक जगह वह झुंझला कर कहती है-" एक पुरुष पचास स्त्रियों से प्रेम करता फिरता है,उसे तुम्हारा समाज कुछ नहीं कहता? एक स्त्री अगर अकेली,सम्मान से जीना चाहती है तो उसके चारों तरफ गिद्ध नोच खाने को तैयार रहते हैं

xxxx

और होता क्या है चरित्रहीन होना? चरित्र है क्या? क्या है उसकी परिभाषा? उसका सामाजिक संदर्भ दिया किसने है? तुम्हीं पुरुषों ने न ?

xxxx

इतनी हिंसा-इतना प्रतिकार….. मुझे मिटा देने की इतनी तिलमिलाहट, कितने दयनीय हैं वे तुम्हारे मित्र….. यूनिवर्सिटी के जाने माने लोग।"

इन दोनों कहानियों में कथानक के स्तर पर कोई समानता नहीं है बस दोनों स्त्रियों-मिसपाल और इला के आसपास पुरुष सहकर्मियों का सामान्य व्यवहार एक जैसा है।

सहकर्मी भले ही लिख लोढा, पढ़ पत्थर हों , किसी न किसी बहाने महिलाओं का मजाक उड़ाना उनकी आदतन नियति है। अपनी स्वाभाविक कुंठा की अहंकारोक्तियाँ आम तौर पर पुरुषों में पायी जाने वाली स्त्री संबंधी एक विशेषता है।

बचपन में मां और पिता से भी मिस पाल को कभी कोई आत्मीयता नसीब न हुई थी। चित्रकारी और संगीत में उसकी रुचि थी।उसी में वह अपने जीवन की सार्थकता का भ्रम ओढ़े थी, लेकिन पिता जिस मानसिक संरचना के थे उसके चलते उनकी नजर में यह सब अभद्र किस्म का नाच गाना था।

पूरी जिंदगी ही मानो उपेक्षा का पर्याय हो गयी हो मिसपाल । आजिज आकर एक दिन वह दिल्ली छोड़ने का निर्णय लेती और कुल्लू से बारह-चौदह किलोमीटर अलग, मुख्य सड़क के पास बसे रायसन गांव में रहने चली जाती है।

यहीं एक दिन उसके आफिस का सहकर्मी रणजीत मिल जाता है । ऑफिस में काम करते हुए मिसपाल की थोड़ी बहुत आत्मीयता इसी रणजीत से थी।रणजीत उस एक रात मिसपाल के कॉटेज में ही रुक जाता है । उस रात मिस पाल पहली बार रणजीत से अपनी जिंदगी के बीते पन्नों को खोलती है -

"सोचो, माँ को मेरा घर में होना ही बुरा लगता था । पिताजी को मेरे संगीत सीखने से चिढ़ थी। वे कहा करते थे कि मेरा घर-घर है रंडीखाना नहीं । भाइयों का जो थोड़ा-बहुत प्यार था, वह भी भाभियों के आने के बाद छिन गया। मैंने आज तक कितनी-कितनी मुश्किल से अपनी पवित्रता को बचाया है, यह मैं ही जानती हैं। तुम सोच सकते हो कि…"

दिल्ली की अच्छी खासी नौकरी छोड़कर इस बेगानी जगह में मिसपाल एक निचाट तंगहाली की एकांत दरिद्रता में बसर कर रही है । इस पूरे परिवेश में लद्धड़ ढंग से फैली ऊब,अभाव और दरिद्रता को जिस निस्संगता से मोहन राकेश ने उकेरा है, वह विरले कथाकारों के वश का है । अपनी हर कहानी की तरह डबडबाई आंखों के अचीन्हे आंसुओं की तरल भावुकता मिसपाल में भी दिख जाती है । संकेतात्मक विम्ब विधान वैसे भी नई कहानी की एक प्रमुख विशेषता रही है । रणजीत से वह अपने को शापित होने की एक मन गढ़न्त कहानी भी बताती है- "अपने पिछले जन्म में वह सुंदर लड़की थी और नृत्य-संगीत आदि कलाओं में बहुत पटु थी । उसके पिता बहुत धनी थे और वह उनकी अकेली संतान थी । जिस व्यक्ति से उसका ब्याह हुआ वह बहुत सुंदर और धनी था । "मगर मुझे अपनी सुंदरता और अपनी कला का बहुत मान था, इसलिए मैंने अपने पति का आदर नहीं किया । कुछ ही दिनों में वह बेचारा दुखी होकर इस संसार से चल बसा । इसीलिए मुझ पर अब यह शाप है कि इस जन्म में मुझे सुख नहीं मिल सकता ।"

अपने बारे में मिस पाल का यह एक खूबसूरत और रचा हुआ झूठ है, जिसकी आड़ लेकर वह अपने जीवन की तमाम विडंबनाओं को सहे जा रही है।और इस विश्वास के साथ कि पिछले जन्म में अपने रूप और हुनर के जिस घमंड में आकर उसने अपने पति की उपेक्षा की थी उसी का प्रायश्चित उसे इस जन्म में करना पड़ रहा है।

मिसपाल की स्थितियां भिन्न हैं । वह बिना शादी या बच्चों के अकेली रहकर दिल्ली में नौकरी कर रही है । सहकर्मी गाहे ब गाहे उसका मजाक उड़ाया करते है । लेकिन मान लीजिए उसका परिवार होता तो अनेक तरह की व्यस्तताओं के बावजूद उसके संघर्ष और उसका अकेलापन क्या कम होता? 'रोज' की 'मालती' तो ठंडी एकरसता में इस कदर विलीन हो गई है कि अपनी स्मृतियों से भी उसकी पहचान ही मिट गई है। घर की चारदीवारी में खत्म होती स्त्री की पीड़ा अलग है । कामकाजी महिलाओं को आमतौर पर कई किस्म की मुश्किलें एक साथ घेरे रहती हैं।हमारी सामाजिक संरचना में स्त्री के लिए बचपन की स्मृतियों के साथ जीना असंभव है । वह पूरी

तरह यथार्थ को स्वीकार करे और उसी के साथ समर्पण भाव से जिये। लगभग पशुता की स्थिति में।

कल्पना,स्वच्छंदता,हंसना,कविता,चित्रकारी आदि की रोमानी दुनिया उसके लिए नाना किस्म की अफवाहों, लांछनाओं से भरी होती है।

पुरषो की बनाई दुनिया में स्त्री अपने मन से नहीं जी सकती। वह बल पूर्वक,छल पूर्वक उसे बहिष्कृत करता है। मिसपाल लगातार भाग रही है। पहली बार पंद्रह साल की उम्र में मां-बाप के घर से भाग कर दिल्ली आती है। फिर ऑफिस के सहकर्मियों के चलते दिल्ली से भागकर कुल्लू के पास रायसन चली जाती है। वह लगातार एक अंधेरे से दूसरे अंधेरे की ओर भाग रही है। शिमला, मनाली, नैनीताल की पहाड़ियों के 'लोकेल' पर नई कहानी के दौर में टूटे प्रेम की खूबसारी रोमानी कहानियां, जिनमें एक उदास संगीत की मद्धिम लय होती है, लिखी गई हैं। उन सबसे उलट मिसपाल के यहां एक अंधेरा है। स्त्री की नियतिऔर हिस्से का अंधेरा। इसी अंधेरे में घिरी मिसपाल की कल्पनाओं में एक राजकुमार जैसा पति है जिसे उसने घमंड वश प्यार नहीं किया था। वह उसी के प्रायश्चित स्वरूप अपने जीवन का अंधेरा जी रही है।

रात तक रणजीत को भी लगने लगता है कि मिस पाल जो शाम तक उसे कई दिन तक यहां रुकने का आग्रह कर रही थी अब उससे भी ऊबने लगी है।शायद इस लिए भी कि इस बीच वह लगातार बेपर्द होती जा रही है। इतने समय तक साथ रहकर वह बाहर बरामदे में सो जाता है।कमरे के भीतर मिस पाल। थोड़ी- थोड़ी देर बाद - रणजीत!- अंदर से आवाज आई तो मेरे सारे शरीर में एक सिहरन भर गई- सरदी तो नहीं लग रही?"

फिर थोड़ी देर बाद- अंदर की चारपाई चिरमिराई और लकड़ी के फर्श पर पैरों की धप्-धप् आवाज सुनाई देने लगी। फिर सुराही से चुल्लू में पानी पीने की आवाज आने लगी।

"रणजीत!

प्यास तो नहीं लगी?"

ऐसे ही कभी चूहों की उछल कूद में कुछ गिरने की आवाजें।जाहिर है मिस पाल को रात भर नींद नहीं आती।

दूसरे दिन रणजीत वापस लौटने को होता है। वह चाहता है कि मिसपाल कुल्लू तक उसके साथ बस से चले और अपनी दिनचर्या की चीजें वहीं से खरीद लाये।कुल्लू तक उसका साथ भी रहेगा। मिसपाल कुछ टीन के डब्बे साथ लेकर बस अड्डे तक चलती भी है, फिर अचानक उसके भीतर की ऊब प्रबल होने लगती है और वह कुल्लू तक जाने को स्थगित कर देती है।रणजीत उससे साथ चलने की जिद करता रहा जाता है लेकिन वह नहीं जाने का मन बना चुकी होती है। उसका मन शायद रणजीत से भी ऊब चुका है और वह जल्दी ही उसे विदा करके अपने एकांत अंधेरे में लौटने का मन बना चुकी है।

बस अड्डे पर कहानी का अंत अपनी करुणा और विद्रूप व्यंग के चरम पर पहुंचने लगती है।मिसपाल बस अड्डे की खिड़की पर रणजीत के लिए टिकट खरीदने जाती है।एक खाली डिब्बे की तरह थुलथुल मिसपास को देखकर गांव के छोटे- छीटे लड़के उसपर फब्तियां कसते हैं-

"एक लड़के ने धीरे-से आवाज लगाई, "कमाल है भई कमाल है!"

इस पर आसपास खड़े बहुत-से बच्चे हँस दिए। मुझे लगा जैसे किसी ने मेरे भारी मन पर एक और बड़ा पत्थर डाल दिया हो। बच्चे सबके सब टिकटघर के आसपास जमा हो गए थे और आपस में खुसर-पुसर कर रहे थे। मैं उनसे कुछ कह भी नहीं सकता था, क्योंकि उससे मिस पाल का ध्यान खामखाह उनकी तरफ चला जाता। मैं उधर से अपना ध्यान हटाकर दरिया की तरफ से आते हुए लोगों को देखने लगा। फिर भी बच्चों की खुसर-पुसर मेरे कानों में पड़ती रही। दो लड़कियाँ बहुत धीरे-धीरे आपस में बात कर रही थीं, "मर्द है।"

"नहीं, औरत है।"

"तू सिर के बाल देख, बाकी शरीर देख। मर्द है।"

"तू कपड़े देख, और सब कुछ देख। औरत है।"

"आओ, बच्चो आओ, पास आकर देखो," मिस पाल की आवाज से मैं जैसे चौंक गया। मिस पाल टिकट लेकर खिड़की से हट आई थी। बच्चे उसे आते देखकर 'आ गई, आ गई' कहते भाग खड़े हुए। एक बच्चे ने सड़क के उस तरफ जाकर फिर जोर से आवाज लगाई, "कमाल है भई कमाल है।"

रणजीत बस से चला जाता है। रायसन में अकेली बच रहती है मिसपाल। मिसपाल दिल्ली में अपनी कुरूपता को लेकर सहकर्मियों की फब्ती से भागकर कुल्लू के पास एक निरापद गांव रायसन में रहने चली आती है। इस मामूली बात के लिए वह अपनी नौकरी तक छोड़ देती है, लेकिन वे फब्तियां यहां भी उसका पीछा नहीं छोड़तीं। वैसे तो यह एक विशिष्ट किस्म की चरित्र प्रधान कहानी है, लेकिन कई अर्थों में समूची स्त्रियों की भी कहानी है।अपने मन का जीवन जीने की छूट स्त्री को नहीं है। पुरुष एक साथ स्त्री में सौदर्य और समर्पण दोनों चाहता है। नई कहानी में पहाड़ी शहरों और कस्बों को लेकर जो रूमानी छवियाँ गढ़ी गयी थीं, उसका निषेध रचती है मिसपाक। स्त्रियों के मामले में चाहे दिल्ली हो चाहे रायसन,चाहे अबोध बच्चे हों या प्रोफेसर सब एक ही तरह से पेश आते हैं।